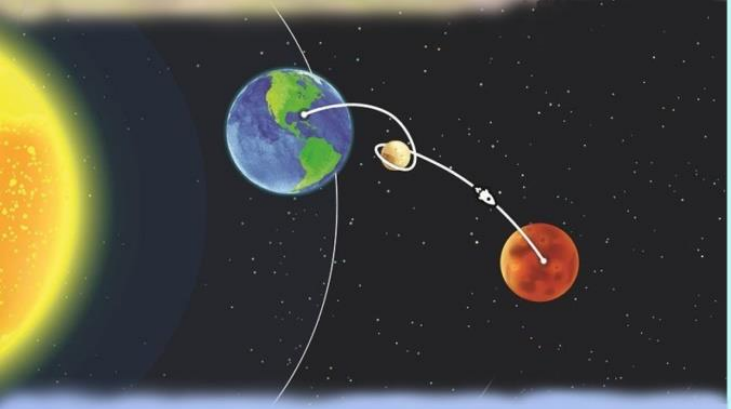

मापन की कविता

माप-तौल के बिना भला कोई जीवन चलता है
क़ुदरत का ये तोहफ़ा, हर जीव को मिलता है।

बन्दर जब भी कूद लगाता सही लगाता है
बया को अपना नीड़ बनाना ठीक से आता है
बोझ उठाती चींटी कभी न दबके मरती है
ना चट्टानों पर चढ़ती बकरी ज़रा भी डरती है
कोई अपना घर बुन लेता, कोई सिलता है
क़ुदरत का ये तोहफ़ा, हर जीव को मिलता है।

मापन की आदत को हमने आगे बहुत बढ़ाया
इसकी तरकीबों से अपना जीवन सरल बनाया
चाहे दूरी-भार-आयतन, चाहे समय का मापन
जीवन के हर पहलू का हम करते हैं सत्यापन
मापन की ताक़त से अपना सिक्का चलता है
क़ुदरत का ये तोहफ़ा, हर जीव को मिलता है।

फिर भी कितनी चीज़ों को हम माप नहीं पाते
मन के भावों की गहराई क्यों नाप नहीं पाते?
पैमानों में कहां समाता सूक्ष्म सृष्टि विस्तार!
ना ही कोई बता सका है घृणा-प्रेम का भार
फूल ख़ुशी का मापन हद से बाहर खिलता है
क़ुदरत का ये तोहफ़ा, हर जीव को मिलता है।

(आशुतोष उपाध्याय)